गणेश गायत्री मन्त्र

ॐ एकदन्ताय विद्महे
वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥

ॐ। हम उन्हें जानें जिनका एक दन्त है।
हम उनका ध्यान करें जिनकी सूँड़ वक्र है।
वे एकदन्त हमारे पथ को आलोकित करें और हमें आत्मज्ञान प्रदान करें।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।